(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

RENAISSANCE AND FREEDOM MOVEMENT

Dr. Ranjana Kulshreshtha

Associate Professor, Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad, UP

पुनर्जागरण, नवजागरण और स्वतंत्रता आन्दोलन

डॉ0 रंजना कुलश्रेष्ठ,
एसोसिएट प्रोफेसर,
ठा0 बीरी सिंह महाविद्यालय, टूण्डला
जिला–फरोजाबाद,
उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना–

भारतीय इतिहास में 19 वीं सदी से आधुनिक काल का आरम्भ होता है। सन् 1857 की क्रान्ति से स्वतंत्रता संग्राम का श्री गणेश मंगल पांडेय ने किया। ब्रिटिश राज को लगने लगा कि अब भारतीय दासता स्वीकार नहीं कर सकते। चारों ओर राष्ट्र की चेतना नई धारा का प्रवाह एवं नवचेतना की लहर दौड़ गई। राष्ट्र.प्रेम युक्त का कविताएँ एवं नाटक रचे गए, नाटकों के माध्यम से जागरूकता फैलायी गई और सन् 1857 की क्रान्ति से पुनर्जागरण, नवजागरण की लहर सम्पूर्ण भारत में फैल गई। भारतेन्दु युग से प्रगतिवादी युग तक की समयावधि ही पुनर्जागरण, नवजागरण है। पुनर्जागरण, नवजागरण और स्वतंत्रता आन्दोलन का सम्बन्ध स्थापित करना शोध पत्र का मुख्योद्देश्य है।

पुनर्जागरण, नवजागरण–

यूरोप में 15वीं शताब्दी के मध्य से 16वीं शताब्दी के मध्य तक एक नई धारा का प्रवाह हुआ या नवचेतना का उदय हुआ उसे पुनर्जागरण, नवजागरण के नाम

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

से जाना जाता है। उस वक्त यूरोप में ज्ञान का पुनरुत्थान, मानवतावाद का उदय, तथा संस्कृति की चर्च से मुक्ति, विज्ञान का विकास, लोक भाषाओं का विकास, नवीन आविष्कार एवं अन्वेषक हुए या बौद्धिक क्रान्ति हुई। इसी बौद्धिक क्रान्ति का नाम पुनर्जागरण व नवजागरण है।

पुनर्जागरण का अर्थः—फ्रैंच भाषा का शब्द रिनेसा का इंग्लिश लिप्यांतरण रि वर्थ ऑफ नॉलेज है जिसका शाब्दिक अर्थ ज्ञान का पुनर्जन्म है।

"जो नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से आरम्भ हुआ, वह भारतेन्दु युग में और व्यापक बना उसकी साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद विरोधी प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युग में और पुष्ट हुई फिर निराला के साहित्य में कलात्मक स्तर पर तथा उनकी विचारधारों में ये प्रवृत्तियाँ कांतिकारी रुप में व्यक्त हुई" [1]

उपरोक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि भारत में पुनर्जागरण भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, छायावादोत्तर युग के अन्तर्गत प्रगतिवादी युग तक की समयावधि पुनर्जागरण काल में सम्मिलित है। अर्थात 1857—1947 तक 90 वर्ष की समयावधि ही पुनर्जागरण व नवजागरण है।

"पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है" [2]

यहाँ जातीय संस्कृतियों से तात्पर्य – भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति से है जब इन दो संस्कृतियों में टकराहट हुई तब एक नई रचनात्मक ऊर्जा पुनर्जागरण का उदय हुआ। राजनीतिक अथवा धार्मिक आन्दोलन न होकर मानस की एक विशिष्ट स्थिति को उजागर करता है इन पंक्तियों से इतनी बात तो सुपाच्य हो जाती है कि मानव की विशिष्ट स्थिति को ज्ञानालोक में जाना ही पुनर्जागरण व नवजागरण कहलाता है।

भारत में पुनर्जागरण, नवजागरण—

जो कार्य यूरोप में 15 वीं सदी के मध्य तक हुआ वही कार्य भारत में लगभग 300 वर्ष पश्चात 19वीं सदी के मध्य से लेकर 20वीं के मध्य तक अर्थात 1857—1947 तक 90 वर्ष की समयावधि विभिन्न क्षेत्रों में बौद्धिक क्रान्ति का उदय

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

हुआ। सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में केशव चंद्र सेन, ईश्वर चंद्र विद्यासागर एवं ज्योतिबाफुले आदि महान विभूतियों ने सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के साथ साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी मानस की विशिष्ट स्थिति को पुनर्जाग्रत कर रचनात्मक ऊर्जा का संचार किया। वैज्ञानिक क्षेत्र में जगदीशचंद्र बसु, सी.वी.रमन, सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर, हरगोविन्द खुराना एवं ए.पी.जे. अब्दुलकलाम आदि वैज्ञानिकों ने नवचेतना के उदय में महत्ती भूमिका का निर्वहन किया।

10 मई 1857 को वीर मंगल पांडे ने हाथ में मसाल लेकर प्रथम स्वाधीनता संग्राम का शंखनाद फूक दिया जिसका नेतृत्व बहादुरशाह जफर ने किया। बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहब, लियाकत अली, कुँवर सिंह, अमर सिंह, खान बहादुर खाँ एवं अजी मुल्ला आदि कांतिकारी हुए। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संगठन का गठन हुआ और प्रथम अध्यक्ष के रुप में डब्ल्यू. सी. (व्योमेश चन्द्र) बनर्जी नियुक्त हुए। जैसे–जैसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन होते गए वैसे–वैसे अध्यक्ष भी बदलते गए। कभी व्योमेश चन्द्र बनर्जी, कभी दादा भाई नरौजी, कभी रास बिहारी घोष, कभी महात्मा गाँधी, कभी जवाहर लाल नेहरु, कभी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, तो कभी जे. वे. कृपलानी की अध्यक्षता में स्वतंत्रता आन्दोलनों का अन्त हुआ और भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति मिली। 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो दलों में विभक्त हो गई नरम दल और गरम दल।

प्रथम विश्व युद्ध 1914–1918 एवं द्वितीय विश्वयुद्ध 1939–1945 की समयावधि में महात्मा गाँधी विभिन्न आन्दालनों–चंपारण सत्याग्रह, खिलापत आन्दोलनों, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं भारत छोडो आंदोलन का नेतृत्व किया। 1857–1947 तक विभिन्न आन्दोलन हुए जिनमें– मंगल पांडे, बेगम हजरत महल,रानी लक्ष्मी बाई, कुँवर सिंह, अमर सिंह, बाल–लाल पाल, सुखदेव, भगत सिंह, बटुकेश्वर

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

दत्त, चन्द्रशेखर आजाद एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने देश की आजादी के लिए स्व की आजादी मिटा दी।

अन्ततः कहा जा सकता है कि 1857–1947 तक 90 वर्ष की समयावधि में कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में जिस नई धारा का प्रवाह व नवचेतना का उदय हुआ हिंदी साहित्य में उसे पुनर्जागरण व नवजागरण के नाम से जाना जाता है।

हिंदी साहित्य और पुनर्जागरण, नवजागरण–

राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के जनक हैं तो हिंदी पुनर्जागरण काल के पितामह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा राम मोहन राय ने आधुनिक भारत की नींव रखी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने पुनर्जागरण की तथा मंगल पांडेय ने प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन शुभारम्भ किया। इन शिक्षित भारतीयों ने सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक नवचेतना को जनमानस में जाग्रत किया। जहाँ भारत में एक तरफ वैचारिक आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ वहाँ दूसरी तरफ अनेक कुरीतियाँ विद्यमान थी– बाल विवाह, अंधविश्वास, जातिप्रथा, छुआछूत, सतीप्रथा एवं स्त्रियों की दयनीय दिशा थी व विधवा विवाह की पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी। समाज में सामाजिक कुरीतियों का बोलबाला था किंतु शिक्षित वर्ग में नवचेतना का संचार हुआ।

"रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।।" [3]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारत की दीन.हीन को चित्रित कर भारत दुर्दशा अतीत गौरव की सुखद स्मृति को दुखद वर्तमान पर दुख प्रकट करते हैं। यहाँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की राष्ट्रप्रेम सरिता उमड़ पड़ी है और भारत की दीन.हीन दशा की दुखद अनुभूति

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

है। भारतेन्दु ब्रिटिश राज और आपसी कलह को भारत की दुर्दशा का मुख्य कारण मानते हैं। तत्पश्चात वे कुरीतियाँ– रोग, आलस्य, मंदिरा, अंधकार, धर्म, संतोष अपव्यय, फैशन, सिफारिश,लोभ, भय, स्वार्थपरता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल एवं बाढ़ आदि को भी भारत दुर्दशा का मुख्य कारण मानते हैं किंतु सबसे बडा कारण ब्रिटिश राज की हड़पनीति।

"कहाँ करुणानिधि केराव सोरण।
जागत नहिं अनेक जतनकरि भारतवासी रोए।।" [4]

सदियों से जुल्म की चक्की में पिस रहे देशवासियों की असहय वेदना से मर्माहत होकर भारतेन्दु हरिश्चंन्द्र ने लगभग 150 वर्ष पूर्व उक्त पंक्तियों को रचा। तब देशवासी ब्रिटिश दासता के अधीन जीवनयापन करने के लिए विवश थे। भारतेन्दु ने इन पंक्तियों के माध्यम से कृष्ण कन्हैया से अनुनय किया है कि हे! करुणावतार कृष्ण कन्हैया भारत की दुर्दशा और भारतवासियों के करुण क्रंदन को अनदेखा, अनसुना कर कहाँ सो रहे हो–

" भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत।
भए वीरवर सफल सुभट एकहिं सँग गारत।।" [5]

उक्त पंक्तियाँ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण कराती है और वदरीनारायण चौधरी प्रेमघन का मानना है कि 1857 के संग्राम ने कितना भयंकर रुप धारण कर लिया था और क्रान्तिकारियों ने जगह.जगह आंदोलन किए जिससे ब्रिटिश राज से थर.थर काँपने लगाा। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारी एक हो गए किंतु आपसी कलह के कारण व जमीदारों का सहयोग न मिलने के कारण सफल न हो सके अथार्त प्रथम स्वतंत्रता संग्राम विफल रहा।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

"नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगै जहँ।
चना चिरौजी मोल मिलै जहँ दीन प्रजा कहँ।।" [6]

प्रताप नारायण मिश्र का कहना है कि ब्रिटिश राज का बोलबाला था जिसने भारत को दासता की बेड़ियों में जकड़ लिया और नमक, तेल, लकड़ी एवं घास आदि पर टैक्स लगा दिया, भारत को हर संभव तरीके से लूटने का प्रयास किया। देशवासियों की जीवनयापन की स्थिति दयनीय हो गई।

"हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।" [7]

मैथिलिशरण गुप्त कृति भारत.भारती ने उन्हें राष्ट्रकवि बना दिया। आपने भारत.भारती के माध्यम से भूत, वर्तमान और भविष्यकाल का वर्णन बड़े मार्मिक ढंग से किया है। जिसमें भारतीय नागरिकों को प्रेरित कर नया संदेश दिया है कि हम सभी मिलकर देश की उन्नति के लिए विचार करें।

"समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर, साकार बना था,
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।" [8]

समरसता जीवन की वह समतल भूमि है जिस पर आनंद रुपी अमृत प्रवाहित होता है समरसता साधन है और आनंद साध्य ज्ञान, इच्छा और कर्म का सामंजस्य स्थापित हो जाने पर अखंड आनंद का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। सबसे बड़ी बात है कि कमायनी का मनु कर्मशील है और कर्म से आनंद की ओर बढ़ता है। जिससे काव्य में कर्म और चेतना का संदेश प्रधान हो गया व जड़ चेतन का सामंजस्य स्थापित ।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

"जागो फिर एक बार
शेरों की माँ में आया है आज स्यार" [9]

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला भारतीय नवयुवकों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे! भारतीय युवकों तुम फिर एक बार जाग जाओ और याद करो कि सिंधु नदी तट पर रहने वाले तुम्हारे पूर्वज सिंधु प्रदेश के घोड़ों पर सवार अपनी पैदल सेना घुड़सवार सेना, हाथियों की सेना एवं रथों के साथ सुसज्जित होकर रण में लड़ते.लड़ते अपने प्राण न्योछावर कर अमर हो गए। उक्त पंक्तियों ने नवयुवकों के हृदय में नवचेतना जागृत कर नई ऊर्जा का संचार किया।

"चाह नही, मैं सुरबाला के गहनो में गुथा जाऊँ
चाह नही प्रेमी माला विंध प्यारी को ललचाऊँ"
X X X X
X X X X
मुझे तोड लेना वनमाली उस पथ देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ पर जावें वीर अनेक" [10]

उक्त कविता महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के मध्यावधि की है। पुष्प की अभिलाषा कविता के माध्यम से माखन लाल चतुर्वेदी देशभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करना चाहते है। फूल के माध्यम से क्रान्तिकारियों में अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने व बलिदान की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया है। उनका संदेश स्पष्ट है कि जिस मार्ग से होकर मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले गुजरते है वह मार्ग अत्यंत पवित्र है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत–कुकुरमुत्ता, तोड़ती पत्थर एवं भिक्षुक आदि नव चेतना की कविताएँ, सुमित्रानंदन पंत कृत–युगांत, युगवाणी एवं ग्राम्या आदि कविताएँ एवं सुभिद्रा कुमारी चौहान कृत– जलियाँवाला बाग, झांसी की रानी, झण्डे की इज्जत में,

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

स्वदेश के प्रति आदि महत्वूपर्ण कविताएँ जनमानस में नई धारा का प्रवाह, नवचेतना का उदय, एवं नई ऊर्जा का संचार करतीं हैं।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी, या वह स्वंय वीरता का अवतार।
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार।।

उक्त पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान कृत झाँसी की रानी कविता से ली गई हैं। जिसका प्रकाशन सन् 1946 में हुआ।

अन्ततः कहा जा सकता है कि भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग व छायावादोत्तर युग के अन्तर्गत प्रगतिवादी युग तक का समय हिन्दी साहित्य में पुनर्जागरण या नवजागरण काल के नाम से जाना जाता है।

निष्कर्ष–

पुनर्जागरण के मूल्यों द्वारा भारतीय समाज एवं देश को नई दिशा.दशा मिली। राजाराममोहन राय समाज.सुधार के प्रतीक बने तो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी पुनर्जागरण युक्त रचनाओं से स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त किया। जिस वक्त भारतीय जनता स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत थी। उसी वक्त महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास किए। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व किया एवं अन्य क्रान्तिकारियों के असाधारण प्रयासों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। पुनर्जागरण काल में राजा राममोहन राय के द्वारा आधुनिक भारत की नींव रखी गई एवं राजा जी आधुनिक भारत के जनक कहलाए अर्थात् पुनर्जागरण काल को ही आधुनिक भारत का आधार कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. पांडेय सरस्वती, गोविन्द, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017, पृष्ठ, 173

2. वही, पृष्ठ, 173

3. वही, पृष्ठ, 178

4. शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019, पृष्ठ, 403

5. वही, पृष्ठ, 405

6. पांडेय सरस्वती, गोविन्द, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017, पृष्ठ, 179

7. चतुर्वेदी रामस्वरूप, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 26 वां संस्करण, 2021, पृष्ठ, 97

8. वही, पृष्ठ, 119

9. पांडेय सरस्वती, गोविन्द, हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017, पृष्ठ, 201

10. https://hindisamay.com

REFERENCES

1. Pandey Saraswati, Govind, (2017), Hindi Bhasah evum Sahitya ka Vastunishtha Itihaas, Abhivyakti Prakashan, Allahabad, pg 173
2. Ibid, pg 173
3. Ibid, pg 178
4. Shukla Ramchandra, (2019), Hindi Sahitya ka Itihaas, Lokbharti Prakashan, Allahabad, pg 403
5. Ibid, pg 405
6. Pandey Saraswati, Govind, (2017), Hindi Bhasah evum Sahitya ka Vastunishtha Itihaas, Abhivyakti Prakashan, Allahabad, pg 179
7. Chaturvedi Ramswaroop, Hindi Sahitya aur Samvedna ka Vikas, Lokbharti Prakashan, Prayagraj, 26th Ed., 2021, pg 97

8. Ibid, pg 119
9. Pandey Saraswati, Govind, (2017), Hindi Bhasah evum Sahitya ka Vastunishtha Itihaas, Abhivyakti Prakashan, Allahabad, pg 201
10. https://hindisamay.com